राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

सत्र 2020-2021

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद

निःशुल्क वितरण हेतु

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

मिशन प्रेरणा
उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

LLF Language and Learning foundation
Strong Foundation, Stronger Future

सहज-2

कक्षा-2

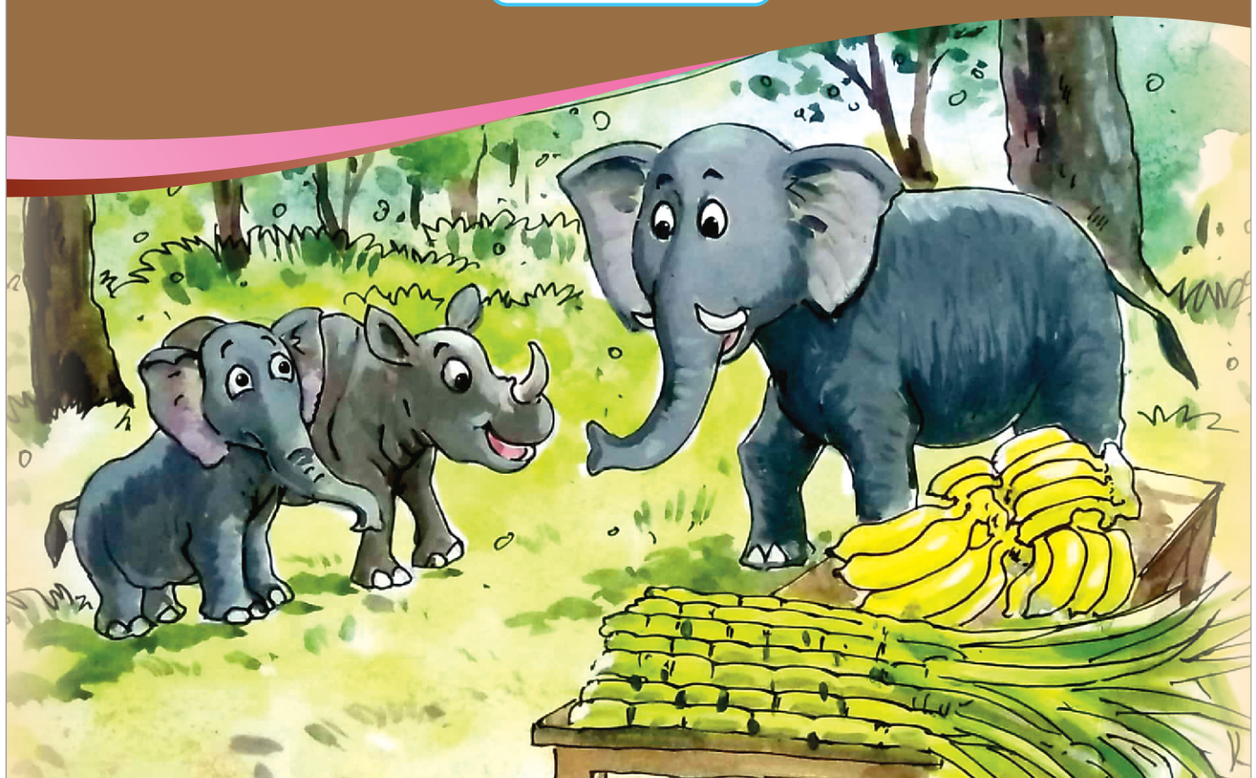

मुझे पढ़ना पसन्द है।

सहज–2

कक्षा–2

संरक्षण : **श्रीमती रेणुका कुमार,** आई.ए.एस
अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ.प्र. शासन, लखनऊ

निर्देशन **श्री विजय किरन आनन्द,** आई.ए.एस
महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.

संकल्पना एवं मार्गदर्शन : **श्री सत्येन्द्र कुमार,** आई.ए.एस.
अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.

श्री सर्वेन्द्र विक्रम सिंह
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ

समन्वयन : **श्री आनन्द पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
श्रीमती शिखा शुक्ला, विशेषज्ञ, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
श्री पी. एम. अन्सारी, राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा

परामर्श : **श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
श्रीमती दीपा तिवारी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ

समीक्षा एवं संपादन : **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
श्री रमेश चंद्र, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली

लेखन मंडल : डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली)

ले–आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : प्रेमचन्द सैनी (ग्राफिक डिजाईनर), जयपुर, राजस्थान

चित्रांकन : सुशांता दास, हीरा धुर्वे, पूजा साहू, सुबिनिता देशप्रभु, निलेश गहलोत, हबीब अली

आभारः इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

योगी आदित्यनाथ
मुख्य मंत्री

उत्तर प्रदेश

संदेश

प्राचीन काल से शिक्षा भविष्य के समाज की धरोहर के रूप में जानी जाती है। भविष्य का समाज कैसा होगा? विकसित समाज की संकल्पना व स्वरूप का आधार तथा प्राथमिकता क्या होगी? इसे ही ध्यान में रखकर वर्तमान में शिक्षा पर निवेश होता है। "निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009" (RTE Act–2009) के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराना उत्तर प्रदेश शासन की संवैधानिक प्रतिबद्धता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप देने हेतु मिशन प्रेरणा कार्यक्रम का फ्रेमवर्क लागू किया गया है। विद्यालयों के भौतिक पूर्वाधार के सुदृढ़ीकरण हेतु 'ऑपरेशन कायाकल्प' शिक्षकों एवं पाठ्यचर्या को पोषित करने के लिए "आधारशिला, शिक्षण संग्रह तथा ध्यानाकर्षण" मॉड्यूल का विकास किया गया है। विद्यालय स्तर पर समाज की सहभागिता एवं जुड़ाव के लिए अनेक प्रयास जारी हैं। इन सभी क्रियाकलापों के उचित क्रियान्वयन व मॉनिटरिंग के लिए प्रदेश से विद्यालय स्तर तक सपोर्टिव सुपरविजन का फ्रेमवर्क संचालित हो रहा है।

प्रस्तुत पठन पुस्तिका ''सहज–2, कक्षा–2'' के सभी बच्चों के पठन कौशल विकास के लिए रुचिपूर्ण एवं आकर्षक पाठ सामग्री सिद्ध होगी। इस उपयोगी पठन पुस्तिका से शिक्षक/शिक्षिकाएँ कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनंददायक बनाने में सफल होंगे। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

डॉ सतीश चन्द्र द्विवेदी

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उ. प्र. सरकार

संदेश

गीता के अनुसार "सा विद्या या विमुक्तये"

विद्या वही है जो बंधनों से मुक्त करे। स्वयं को व्यक्त कर पाना भी एक बंधन है जिस पर जीत प्राप्त करने में शिक्षा एक अहम भूमिका निभाती है।

शिक्षित मनुष्य ही उचित आचरण तकनीकी दक्षता और ज्ञान से समाज, राष्ट्र, विश्व की उन्नति और विकास में सहायक हो सकता है। शिक्षण में निर्धारित, लर्निंग आउटकम की संप्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा विभाग द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी को अग्रसारित करते हुए राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा, मिशन प्रेरणा कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। जिसमें शिक्षकों के लिए विस्तृत अत्यंत उपयोगी 3 हस्त पुस्तिकाओं आधारशिला, ध्यानाकर्षण और शिक्षण संग्रह का निर्माण किया गया।

शिक्षा को रुचिकर, आनंदमय, जीवंत और अपेक्षित ज्ञान व कौशलों से परिपूर्ण बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जिसमें बच्चों के लिए उपलब्ध पठन सामग्री की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षा विभाग के सहयोग से मिशन प्रेरणा द्वारा पठन पुस्तिका ''सहज–2, कक्षा–2'' को, बच्चों में पढ़ने के कौशल को विकसित करने हेतु विकसित किया गया है जिसमें रुचिपूर्ण कहानियों, पहेलियों आदि का समावेश है जिससे सभी बच्चे लाभान्वित होंगे।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सहज–2 पठन पुस्तिका बच्चों के लिए एक रुचिपूर्ण पठन सामग्री सिद्ध होगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

डॉ0. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

आर. के. तिवारी, आई.ए.एस

मुख्य सचिव
उ. प्र. शासन, लखनऊ

संदेश

प्राथमिक स्तर पर हम बच्चों के सर्वांगीण विकास की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं। बच्चों में छिपी अनंत संभावनाओं और अंतर्निहित क्षमताओं को शिक्षक अपने उचित मार्गदर्शन से सींचता है जिसका लाभ पूरे समाज और राष्ट्र को मिलता है। शिक्षा ही वह सशक्त साधन है, जिसके माध्यम से हम एक सशक्त, अनुशासित एवं जागरूक समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व विकास की नींव होती है जिसका प्रमुख आधार बच्चों की भाषा और साक्षरता कौशल को विकसित करना है ताकि बच्चे विद्यालय की सीखने–सिखाने की सभी प्रक्रियाओं में आत्मविश्वास के साथ प्रतिभाग कर सकें और कक्षावार अधिगम लक्ष्य को कुशलता पूर्वक प्राप्त कर सकें। बच्चों के लिए आधारभूत विषय हिंदी व गणित हैं, जो उनकी अकादमिक उपलब्धि का आधार है। अतः अधिकांशतः जागरूक और जिम्मेदार शिक्षाविद प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था का उद्देश्य निर्धारित करते हुए उसकी सम्प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध ढंग से क्रियाशील हैं।

बच्चों के समाजीकरण और सीखने की प्रक्रिया में कहानियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए ''सहज–2, कक्षा–2'' पठन सामग्री तैयार की गई है, इसमें दी गई कहानियाँ और पढ़ने के विभिन्न स्तर के द्वारा, बच्चें, सरलता व सहजता के साथ निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे जिससे बच्चों का समग्र विकास संभव हो सकेगा।

शुभकामनाओं के साथ...

आर. के. तिवारी

रेणुका कुमार, आई.ए.एस

अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ. प्र. शासन, लखनऊ

संदेश

सीखने सिखाने में हमेशा इस तरह की ऐसी ही रीतियों और नीतियों पर ज़ोर देने की बात कही जाती रही है जो बालक को केंद्र में मानकर व्यवहार में लाई जाती हैं। बालक उस कक्षा और उस विद्यालय से हमेशा जुड़ाव महसूस करता है जहां अध्यापक उस पर व्यक्तिगत रुप से ध्यान देते हैं उसके सीखने और उसकी आवश्यकता के अनुसार मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इस तरह का परिवेश बालक एवं बालिका को सीखना आसान बनाता है और प्रेरित करता है।

बच्चों के लिए उपलब्ध कराई गई इस पठन पुस्तिका ''सहज–2 कक्षा–2'' में रुचिकर कहानियाँ दी गयी हैं। इसमें केंद्रित कहानियाँ अपने आस–पास के माहौल को बेहतरीन रूप से समावेश करती हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पठन पुस्तिका बच्चों के पठन कौशल को विकसित करने एवं उनके सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी।

मेरी ओर से बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

रेणुका कुमार

विजय किरन आनंद, आई.ए.एस

महानिदेशक
स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक
समग्र शिक्षा, उ. प्र.
लखनऊ

संदेश

वर्तमान परिदृश्य में मानव जीवन में शिक्षा माँ से शुरू होकर घर, परिवार, पड़ोस, मित्र एवं समाज से होते हुए औपचारिक रूप से विद्यालय में पहुंचती है। जिस प्रकार बीज में विशाल वृक्ष बनने की समस्त खूबियाँ विद्यमान होती हैं, उसी प्रकार बच्चों में भी उनकी अंतर्निहित शक्तियां विद्यमान होती हैं जिससे आच्छादित होकर वह विद्यालय में प्रवेश करता है।

विद्यालय का परिवेश, कक्षा का वातावरण, शिक्षक की प्रेरणा, पाठ्यपुस्तक का आकर्षण, समाज की सहभागिता तथा शिक्षा विभाग का संसाधन, यह सब मिलकर बच्चों का सर्वांगीण विकास करने को क्रियाशील रहते हैं। इसी को ध्यान में रखकर राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा "मिशन प्रेरणा कार्यक्रम" प्रारम्भ किया गया है। विभाग द्वारा विद्यालयी परिवेश एवं कक्षा के वातावरण संवर्धन के लिए "ऑपरेशन कायाकल्प" शिक्षकों एवं पाठ्यपुस्तकों के परिमार्जन हेतु "आधारशिला", "शिक्षण संग्रह" तथा "ध्यानाकर्षण" पुस्तिका विस्तृत रूप से रचित व प्रकाशित की गई है। समाज की सहभागिता के लिए विद्यालय स्तर पर विद्यालय प्रबंध समिति, अभिभावक समूह तथा माता समूह को सक्रिय किया गया है। इन सभी क्रियाकलापों की उचित देखरेख एवं परिमार्जन के लिए प्रदेश, मण्डल, जिला एवं ब्लॉक स्तर पर "सपोर्टिव सुपरविजन" संचालित किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तिका ''सहज–2, कक्षा–2'' शिक्षा विभाग द्वारा पठन सामग्री के रूप में रुचिकर कहानियाँ और पहेलियाँ विशेषकर प्राथमिक स्तर की कक्षाओं को ध्यान में रखकर विकसित की गई है। यह बच्चों को आनंददायक लगेगी और उनके पढ़ने सीखने को रुचिकर और सरल बनाएगी, जिसका परिणाम सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास के रूप में परिलक्षित होगा।

अतः हमें पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि यह ''सहज–2, कक्षा–2'' बच्चों के लिए आनंदमय एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मंगल कामनाओं के साथ।

विजय किरन आनंद

सत्येन्द्र कुमार, आई.ए.एस

अपर राज्य परियोजना निदेशक
समग्र शिक्षा, उ. प्र.
लखनऊ

संदेश

शिक्षा देश व समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा को गुणवत्तायुक्त बनाया जाये, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी विचारवान और जिम्मेदार नागरिक बन सके।

प्राथमिक स्तर पर भाषा एवं गणित की शिक्षा बच्चों की विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण आधार है। इस कड़ी को प्रबल बनाने के साथ ही बच्चे के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य पूर्ण होता है। बच्चा पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण करके अपने पूर्ण ज्ञात सन्दर्भों से जोड़ पता है, तो उसके द्वारा विज्ञान, सामाजिक विषय आदि विषयों की निर्धारित दक्षताएं समझ पाना बहुत सहज हो जाता है।

प्रस्तुत पठन पुस्तिका ''सहज–2, कक्षा–2'' का निर्माण शिक्षा ग्रहण कर रहे बच्चों के लिए किया गया है। शिक्षा विभाग द्वारा सृजनशीलता, कौशल एवं समर्पण से जटिल विषयों को सहज एवं रोचक बनाने के लिए शैक्षिक प्रयत्न किये हैं जो इस पठन पुस्तिका के माध्यम से सभी के लिए जीवंत उदाहरण बन सकेंगे।

सत्येन्द्र कुमार

प्रेरणा सूची

विषय	दक्षताएँ
सुनकर समझना और प्रतिक्रिया देना	1. ग्रेड 2 के स्तर की कहानियों और कविताओं का आदर्श वाचन होते हुए सुनकर समझ लेता/लेती है। 2. स्पष्ट तौर पर कहें गए मुख्य विचारों, पात्रों और घटनाओं को स्मृति के आधार पर बता सकता/सकती है तथा आदर्श वाचन किये गए पाठ से (व पाठ के परे) सरल निष्कर्ष निकाल सकता/सकती है (ग्रेड 2 के स्तर का पाठ)
मौखिक शब्दावली	3. ग्रेड 2 के पाठ में इस्तेमाल किये गए टायर/स्तर–2 के शब्दों को समझते हैं। जैसे– ईमानदारी, उदारता तथा इनमें से कुछ का अपने जवाबों में इस्तेमाल कर सकता/सकती है।
मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन	4. घर की भाषा में अपनी सोच, विचारों व राय को मौखिक तौर पर व्यक्त करता/सकती है तथा पात्रों व कथानक के बारे में प्रश्न पूछता/पूछती है। 5. चित्रों के माध्यम से किसी कहनी को घर की भाषा में हाव–भाव व शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए सुना सकता/सकती है तथा तथ्यों को हिन्दी के सरल वाक्यों में पुनः बता सकता/सकती है।
ध्वनियों में जोड़–तोड़ कर पाना	6. बहु–अक्षरीय शब्दों की ध्वनियों को जोड़–तोड़ सकता/सकती है।
वर्ण पहचान	7. ग्रेड–2 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी वर्णों ओर अक्षरों तथा संयुक्ताक्षरों को पहचान लेता/लेती है।
शब्द पहचान/पढ़ना	8. ग्रेड–2 के अंत तक सिखाये गए वर्णों और अक्षरों (3 या उससे अधिक वर्ण या अक्षर) से बने परिचित शब्दों को उचित गति और शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
मौखिक पठन प्रवाह	9. अपने ग्रेड के स्तर के 7–10 वाक्यों (50–60 शब्द) से बने पाठ्यांश को उचित या ठीक–ठाक प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
पढ़कर समझना	10. ग्रेड–2 के स्तर के पाठ (कविता, कहानी व सरल जानकारीपरक पाठ) को समझते हुए पढ़ सकता/सकती है व साथ में शब्दों के अर्थ भी जानता है ओर सरल निष्कर्ष भी निकाल सकता/सकती है। 11. पाठ में से कही गयी जानकारी को ढूंढ कर सरल निष्कर्ष के आधार पर छूटी हुई जानकारी को निकालना। उदाहरण के लिए, विजय के पास लाल हैट, नीला कोट और पीले मोजे थे– हैट का रंग क्या था? इसी के साथ घटनाओं के संदर्भ में किसी पात्र की मंशाओं व कारणों के बारे में निष्कर्ष निकाल सकता/सकती है। 12. घर की भाषा में सरल शब्दों में कहानी पुनः सुना सकता है और हिंदी में भी प्रयास करता/करती है।
लेखन	13. डिकोडिंग की गतिविधि के तौर पर शब्द लिख सकता/सकती है। संरचनाबद्ध लेखन गतिविधि के तौर पर शब्द व सरल वाक्य लिख सकता/सकती है (उदाहरण के लिए, इस तरह के प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देते हुए जैसे– गांव का नाम क्या था?, बिल्ली चूहे के पीछे क्यों भागी?) 14. किसी चित्र या अनुभव पर 2–3 वाक्य सही–सही लिख लेता/लेती है।

विषय सूची

कविता		1
पाठ–1	साइकिल	2
पाठ–2	कौए की भूख	4
पाठ–3	माही और सुरेश	6
पाठ–4	बंदर का चश्मा	8
पाठ–5	मेंढकी और चिड़िया	10
पाठ–6	मोनू बछड़ा	12
पाठ–7	चीकू और मीकू	14
पाठ–8	जादुई बीज	16
पाठ–9	बरसात का मौसम	18
पाठ–10	गुड़िया की बिल्ली	20
पाठ–11	दशहरा का मेला	22
पाठ–12	बबलू हाथी	24
पाठ–13	चिड़िया के बच्चे	26
पाठ–14	भूरा की गेंद	28
पाठ–15	कोयल का घोंसला	30
पाठ–16	मोर	32
बताओ, मैं कौन?		34

कविता

छुन–छुन, छुन–छुन
तेल में नाची,
प्लेट में आ
शरमाई पकौड़ी।

दौड़ी–दौड़ी
आई पकौड़ी।

हाथ से उछली
मुँह में पहुँची,
पेट में जा
घबराई पकौड़ी।

दौड़ी–दौड़ी
आई पकौड़ी।

मेरे मन को
भाई पकौड़ी।

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

पाठ–1

साइकिल

पापा ने रमन के लिए साइकिल खरीदी। रमन साइकिल चलाना सीखने लगा। एक दिन रमन साइकिल चला रहा था। सड़क पर एक कुत्ता सोया हुआ था।

रमन कुत्ते को नहीं देख पाया। उसकी साइकिल कुत्ते से टकरा गई। कुत्ता जोर–जोर से भौंकने लगा। रमन डर गया। वह साइकिल छोड़कर वहाँ से भाग गया।

पाठ–2

कौए की भूख

कौए को भूख लगी। वह एक आम के पेड़ पर जा बैठा। पेड़ पर आम लगे हुए थे। उस पेड़ पर एक पीला गुब्बारा भी अटका हुआ था। कौए को यह गुब्बारा एक मोटे आम जैसा लगा।

गुब्बारे को देखकर कौए की भूख और बढ़ गई। वह गुब्बारे के पास गया। जैसे ही उसने खाने के लिए गुब्बारे में चोंच मारी वह फूट गया– फटाक....। कौआ डर कर उड़ गया।

पाठ–3

माही और सुरेश की पतंग

माही और सुरेश दोस्त थे। एक दिन दोनों पतंग उड़ा रहे थे। दोनों की पतंगे आसमान में बहुत ऊँचाई तक उड़ रहीं थीं। तभी तेज आँधी आ गई। आसमान से सर्र–सर्र की तेज आवाज़ें आने लगीं।

दोनों की पतंगे कभी दाएं कभी बाएं भाग रही थीं। धूल की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पतंगे फर फराते–फराते आपस में फँस गई। दोनों की पतंगे फटकर जमीन पर गिर गईं।

पाठ–4

1

बंदर का चश्मा

एक बंदर खाने की तलाश में मकान की छत पर चढ़ा। वहाँ उसे एक चश्मा मिला। चश्मा पहन कर बंदर को सब उल्टा दिखने लगा। बंदर बोला– ''अरे! यह क्या? आसमान नीचे और जमीन ऊपर।'' बादलों को नीचे देखकर बंदर को बहुत मजा आया।

वह छत से बादल पकड़ने के लिए नीचे कूदा और गिरा, धड़ाम....। बंदर का चश्मा भी टूटा, चटाक...। अब बंदर को ना बादल दिखे, ना आसमान।

पाठ–5

मेंढकी और चिड़िया

एक थी मेंढकी और एक थी चिड़िया। वह दोनों घूमने निकली। उन्हें एक कुआँ मिला। चिड़िया तो फुर्र से उड़ गई। मेंढकी कुएँ में गिर गई। चिड़िया कहने लगी– ''कैसी रही?'' मेंढकी बोली– ''मुझे मजा आ रहा है। मैं तो नहा रही हूँ।''

फिर दोनों आगे चलती गईं। आगे उन्हे बाढ़ मिली। चिड़िया फुर्र से उड़ गई। मेंढकी बाढ़ में फँस गई। चिड़िया कहने लगी ''कैसी रही?'' मेंढकी बोली– ''मुझे मजा आ रहा है। मैं तो पीठ खुजला रही हूँ।''

पाठ–6

मोनू बछड़ा

मोनू बछड़ा रोज अपनी माँ के साथ घास चरने जाता। उसे पक्षियों की आवाज़ सुनना बहुत पसंद था। वह हमेशा उन आवाज़ों का पीछा करता। एक दिन पक्षियों की आवाज़ का पीछा करते-करते वह खो गया। वह वापस जाने का रास्ता भूल चुका था।

उसे माँ की याद आने लगी। उसने एक कोयल की आवाज़ सुनी। कोयल ने उससे कहा– ''तुम मेरी आवाज़ का पीछा करो।'' मोनू कोयल की आवाज़ का पीछा करने लगा। पीछा करते-करते वह अपनी माँ के पास पहुँच गया।

पाठ–7

चीकू और मीकू

चीकू और मीकू गिलहरी साथ में रहती थीं। चीकू, मीकू का सारा खाना खा जाती थी। इसलिए मीकू बहुत परेशान रहती थी। चीकू खाना खा–खाकर बहुत मोटी हो गई। वह इतनी मोटी हो गई कि उससे चला भी नहीं जाता था।

एक दिन चीकू को जोर से भूख लगी। वह चूहे के बिल में खाना ढूंढने गई और फँस गई। मीकू दौड़ कर गई और चीकू को खींचकर बाहर निकाला। तब से उनकी दोस्ती गहरी हो गई। अब वह मिलकर खाना खाने लगीं।

पाठ–8

जादुई बीज

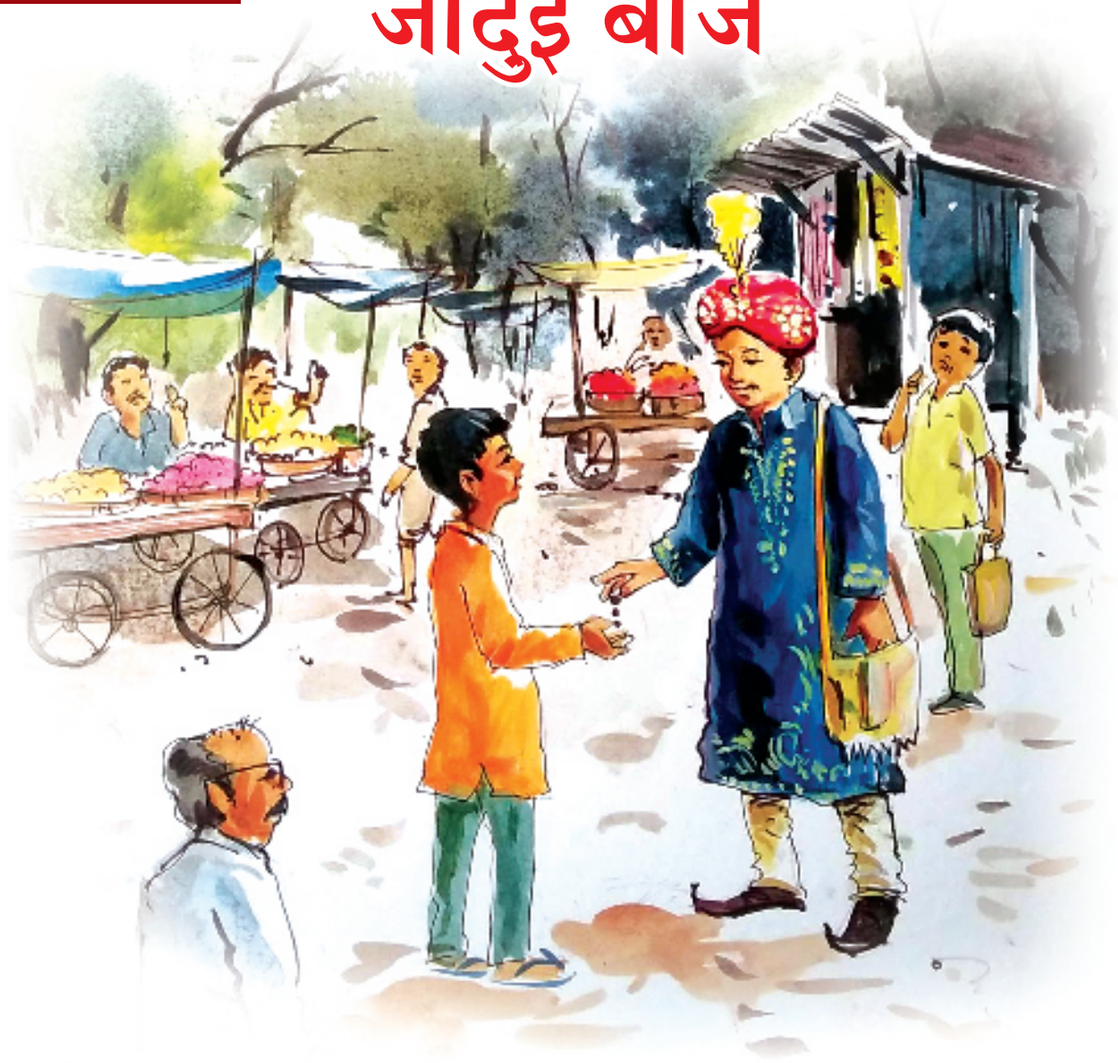

माँ ने राशिद को सेब लेने भेजा। रास्ते में एक लड़का जादुई बीज बेच रहा था। उसने राशिद से कहा– ''तुम जो भी फल चाहो इन बीजों से तुम ले सकते हो।'' राशिद ने उससे वो बीज खरीद लिए।

वापस आने पर माँ ने उससे पूछा– ''यह क्या लाए हो?'' राशिद ने जैसे ही हाथ आगे किया, माँ ने गुस्से से कहा– ''इससे कौन से फल उग आएंगे।'' यह कहकर माँ ने बीज बाहर फैंक दिये। देखते ही देखते वहाँ सेबों से लदा एक पेड़ उग गया। राशिद और माँ दोनों हैरान रह गए।

पाठ–9

बरसात का मौसम

बरसात का मौसम था। गली के बच्चे सोनू के घर खेल रहे थे। तभी बरसात भी शुरू हो गई। बच्चों ने खेलना बंद कर दिया और बच्चें बाहर आकर बरसात के पानी में खेलने लगे। उन्हें मजा आ रहा था। सोनू का कुत्ता भी उनके साथ खेल रहा था।

तभी सबको टर्र–टर्र की आवाज सुनाई दी। कुत्ता टर्र–टर्र की आवाज से चौंक गया। उसने दो मेंढक देखे। वह उनको पकड़ने के लिए दौड़ा। कुत्ते को देखकर मेंढकों ने पानी में छलांग लगा दी। बच्चों को यह देखकर बड़ा मजा आया।

पाठ-10

गुड़िया की बिल्ली

गुड़िया के घर में एक बिल्ली रहती थी। वह बहुत शैतान थी। एक दिन बिल्ली चुपके से सारा दूध पी गई। माँ बोली-''हाय रे! बिल्ली सारा दूध पी गई।'' गुड़िया बोली- ''हाँ तो क्या हुआ? दूध ही तो है।'' एक दिन बिल्ली ने गुड़िया के भाई की किताब फाड़ दी।

भाई बोला- ''हाय रे! बिल्ली ने मेरी किताब फाड़ दी।'' गुड़िया बोली- ''तो क्या हुआ? किताब ही तो है।'' तब एक दिन बिल्ली ने गुड़िया की गुड़िया तोड़ दी। गुड़िया बोली- ''मम्मी, मेरी गुड़िया!'' मम्मी और भाई जोर से हंसने लगे और बोले- ''तो क्या हुआ? गुड़िया ही तो है।''

पाठ–11

दशहरा का मेला

दीपू और दीपा दशहरा का मेला देख कर लौटे थे। उन्होंने मेले में मिठाई, जलेबी, समोसा और चाट खाई। दीपू ने छोटे भाई और बहन के लिए गट्टा, मूंगफली, नमकीन और टॉफी खरीदी। दीपा ने भी गुब्बारे, खिलौने, चश्मा और पतंग खरीदी।

उन्होंने चित्र वाली किताब भी खरीदी और साथ में रंग भी खरीदे। फिर वो दोनों झूला झूले। अंत में उन्होंने रावण के पुतले को जलते हुए भी देखा। घर लौटते समय दीपा ने दीपू से पूछा– ''दशहरा का मेला क्यों लगता है?'' दीपू ने जवाब दिया– ''ताकि तू और मैं मिठाई, समोसे खा सकें और झूला झूल सकें।''

बबलू हाथी

बबलू हाथी को तालाब में नहाना बहुत पसंद था। वह रोज तालाब पर नहाने जाता और खूब खेलता। एक दिन उसे वहाँ भोला मिला, जो दिखने में उसके जैसा ही था। बबलू ने भोला से तालाब में नहाने को कहा। भोला तैयार हो गया। दोनों ने तालाब में खूब मस्ती की। भोला की नाक पर एक सींग था, जो बबलू को चुभ जाता था।

घर जाने पर बबलू की माँ उससे पूछती कि– ''चोट कैसे लगी?'' तो वह कहता– ''भोला हाथी की वजह से लगी।'' बबलू की माँ ने भोला को एक दिन दोपहर के खाने पर बुलाया। बबलू की माँ भोला को देखकर बहुत हंसी और बबलू से कहा– ''यह तो गैंडा है, हाथी नहीं।''

पाठ–13

चिड़िया के बच्चे

एक चिड़िया अपने तीन बच्चों को उड़ना सिखा रही थी। तीनों बच्चे उड़ने से डर रहे थे। तभी चिड़िया ने एक पतंग कट कर आते देखी। उसे एक विचार आया। उसने अपने बच्चों से कहा– ''तुम इस की डोरी पकड़ लो।'' तीनों बच्चों ने पतंग की डोरी पकड़ ली। सभी पतंग के साथ हवा में उड़ने लगे।

उड़ते हुए बच्चों को बहुत मजा आ रहा था। तब चिड़िया ने कहा– ''जब तुम खुद उड़ोगे तो तुम्हें और मजा आएगा।'' अब बच्चों का डर कुछ कम हो गया था। उन्होंने धीरे–धीरे अपने पंख फड़फड़ाए और डोरी छोड़कर उड़ने लगे। अब उन्हें पहले से ज्यादा मजा आने लगा। अब वे उड़ती पतंगों के साथ खुले आसमान में खेलने लगे।

पाठ–14

भूरा की गेंद

एक किसान के पास बड़ा–सा खेत था। उसने इस साल खेत में आलू लगाए। आलू जमीन से खोदने का समय आ गया था। किसान कमजोर था और आलू जमीन से खोदना उसके बस में नहीं था। भूरा कुत्ता उसके खेत के बगल में रहता था। आज भूरे की गेंद खो गई। वह किसान के खेत में गेंद ढूंढने जा पहुँचा।

भूरा ने किसान से पूछा कि मेरी गेंद कहाँ गई। उसने भूरा को देखा और कहा– ''गेंद तो जमीन खा गई।'' अब भूरा ने जमीन को खोदना शुरू कर दिया। जमीन से गोल गोल आलू निकलने लगे। उसने सारा खेत खोद दिया। मगर गेंद कहीं नहीं मिली। किसान ने चुपचाप गेंद निकाली और मेड़ पर रख दी। भूरा को गेंद मिल गई और किसान को खेत के आलू।

पाठ–15

कोयल का घोंसला

एक कोयल ने पेड़ पर घोंसला बनाया। एक दिन उसने देखा कि घोंसले में एक कौआ आकर बैठ गया है। यह देखकर वह परेशान हो गई और अपने दोस्त कबूतर के पास पहुँची। दोनों ने मिलकर एक तरकीब सोची। वे दोनों घोंसले के पास वाली डाली पर बैठकर बातें करने लगे। कोयल बोली– ''आज खरगोश के यहाँ दावत में तो मजा ही आ गया। मैंने मन भर कर खाना खाया।''

कबूतर बोला– ''हाँ, बहुत ही स्वादिष्ट भोजन था। मैंने बड़े दिनों बाद इतना सारा खाना खाया।'' कोयल बोली– ''मुझे फिर से वही स्वादिष्ट हलवा खाने का मन कर रहा है।'' कौआ उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था। वह बोला– ''मुझे पता है, तुम मुझे भगाने के लिए झूठ बोल रहे हो। मैं तो बस आराम करने के लिए बैठा था और अब जा रहा हूँ।'' वह यह कहकर उड़ गया।

पाठ–16

मोर

क्या तुमने कभी मोर देखा है? यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। मोर एक रंगीन पक्षी है जो देखने में बहुत सुन्दर होता है। मोर जब अपने पंख फैलाकर खड़ा होता है जो वह नजारा बहुत ही खुबसूरत होता है। मोर के लगभग 150 पंख होते हैं। बारिश के मौसम में मोर पंख फैलाकर नाचता है।

मोर समय आने पर अपने पंख खुद गिरा देता है। उन्हे तोड़ने की जरूरत ही नहीं पड़ती। मोर का पंख तो लोग घरों में रखते भी हैं। इनका उपयोग घर में सजावट के लिए करते हैं। मोर घास और कीड़े मकोड़े खाता है। यहाँ तक कि वो साँप और छिपकली भी खा सकता है। इसीलिए बहुत से लोग छिपकली भगाने के लिए मोर का पंख घरों में लगाते हैं।

बताओ, मैं कौन ?

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा–सीधा एक समान।

दिन में सोये,
रात में रोये,
जितना रोये उतना खोये।

एक गुफा और बत्तीस चोर,
सारे रहते तीनों ओर,
बारह घंटे करें काम,
बाकी वक्त करें आराम।

मैं मरुँ, मैं कटूं,
तुम क्यों रोये?

लंबी टांगें, लंबी गर्दन,
लेकिन नहीं जिराफ।
बेढब डीलडौल में सचमुच,
समझ गये क्या आप?

एक किले में चोर बसे हैं,
सबका मुँह काला।
पूँछ पकड़ कर आग लगाई,
झट कर दिया, उजाला।

फूल भी हूँ, फल भी हूँ,
और मिठाई भी
तो बताओ क्या हूँ मैं भाई।

लाल डिबिया में हैं,
पीले खाने।
खानों में हैं,
मोती के दाने।

सोने की वह चीज है,
बिके न हाट सुनार।
हल्की–फुल्की भी नहीं
कई किलो है भार।

हाथ मे हरा,
मुँह में लाल,
क्या हूँ मैं?
बताओ प्यारेलाल

उत्तर – दाँत, जहाज, अनार, प्याज, ऊँट, चारपाई, पान, मोमबत्ती, गुलाब जामुन, माचिस

इस अधूरी कहानी को आगे बढ़ाओ और अपने शिक्षक को सुनाओ–

रजनी विद्यालय से आ रही थी। रास्ते में काफी धूप थी। इसलिए वह छाता लगाकर आ रही थी। तभी तेज हवा चलने लगी और उसका छाता हाथ से छूट गया। छाता उड़कर एक पेड़ पर जा अटका। पेड़ बहुत ऊँचा था। वह सोचने लगी कि छाता कैसे उतारा जाय? रजनी की सहेली सरला भी वहाँ आ गई।...

(अब इस कहानी को पूरी करो)